सबसे दुखी राजा

कभी-कभी दुखी होना
अच्छा होता है!

क्रिस वर्मेल

सबसे दुखी राजा

क्रिस वर्मेल

कभी एक ऐसा देश था जहां के लोग हमेशा खुश रहते थे.
कोई भी चीज़ उन्हें कभी उदास, या दुखी नहीं करती थी.

सूरज ढलने पर वे मुस्कुराते और हंसते थे.....

... लेकिन वे तब भी मुस्कुराते और हंसते थे जब बारिश होती थी.

और जब बर्फ गिरती थी और उनके दांत किसी ऑर्केस्ट्रा
की तरह किटकिटाते थे, तब भी वे खुश रहते और हँसते थे.

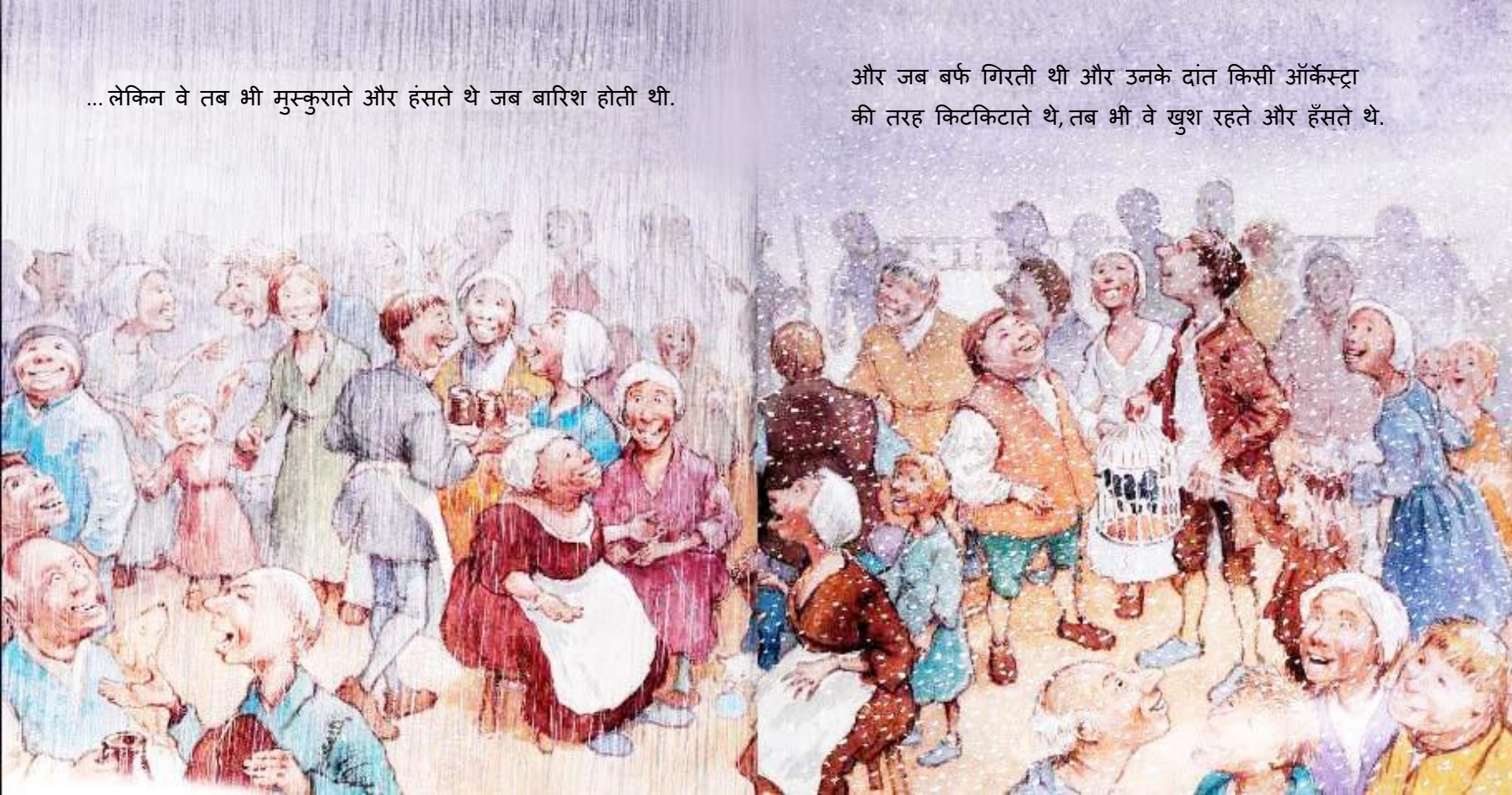

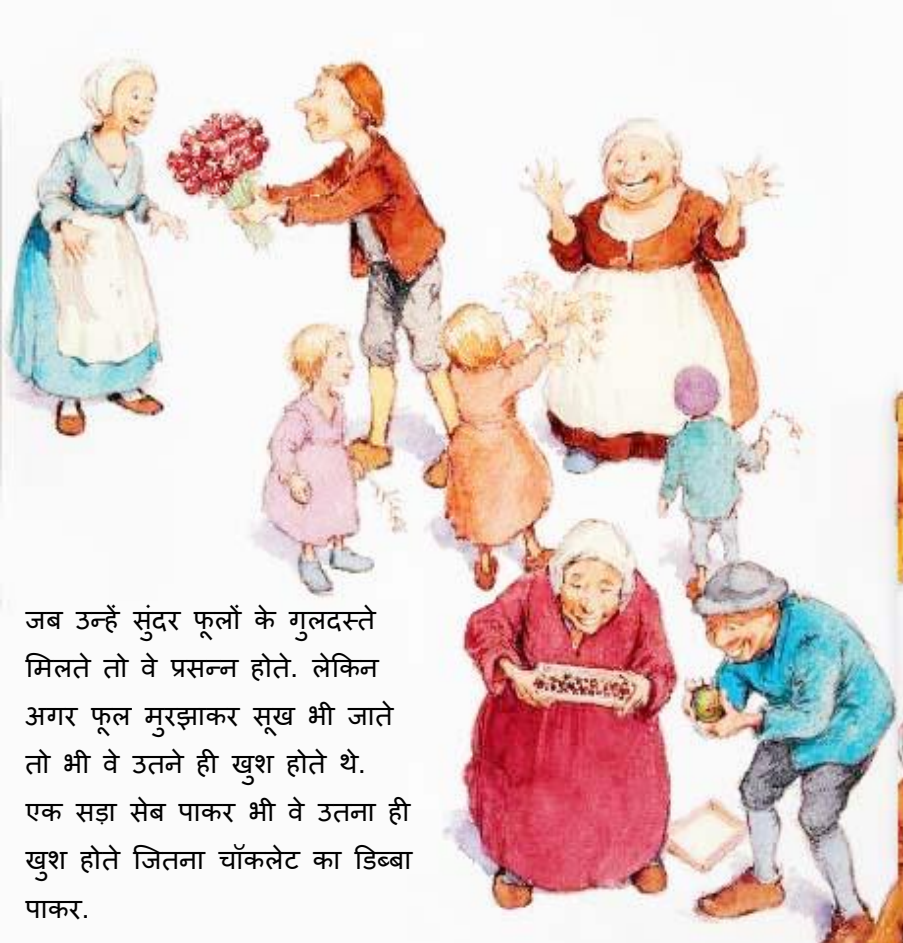

जब उन्हें सुंदर फूलों के गुलदस्ते मिलते तो वे प्रसन्न होते. लेकिन अगर फूल मुरझाकर सूख भी जाते तो भी वे उतने ही खुश होते थे. एक सड़ा सेब पाकर भी वे उतना ही खुश होते जितना चॉकलेट का डिब्बा पाकर.

अगर कोई फिसलकर अपने सिर के बल गिरता, तो वे शायद कहते.
"हमें कितना भाग्यशाली मौका मिला है!
मुझे लगता है कि उस टक्कर से आई सूजन मुझ पर फबती है, क्यों है ना?"
और अगर कभी रात का खाना जल जाता, तो वे कहते,
"शानदार! हमें बस इसी तरह का भोजन पसंद है!"

कोई भी बात उन लोगों को कभी दुखी नहीं करती थी.
वे हमेशा खुश रहते थे - कम-से-कम दूर से तो ऐसा ही लगता था.
लेकिन क्या आपको पता है? उनके पास इसके अलावा कोई चारा ही नहीं था. दुखी होना उस देश के कानून के विरुद्ध था.
दुखी होना देश में प्रतिबंधित था.

राजा के आदेश के अनुसार खुश रहना अनिवार्य था.
और ऐसा कहा जाता था कि राजा देश का सबसे सुखी व्यक्ति था.
उस उस देश के लोग शायद हमेशा सुखी और खुश रहते,
लेकिन एक दिन एक हादसा हुआ . . .

.... एक छोटे लड़के ने देश के कानून को तोड़ा.
वो लड़का रोया.

वो लड़का दिन के उजाले में शहर के चौक पर, राजा की महान मूर्ति के सामने रोया, और कोई भी उसे रोने से रोक नहीं सका. उन्होंने उसे सांत्वना देने की तमाम कोशिश की. लोग उसके सामने नाचे-गाए. उन्होंने उसे बिस्कुट और आइसक्रीम दी. लेकिन उससे कुछ फर्क नहीं पड़ा, वे उसे खुश नहीं कर सके.

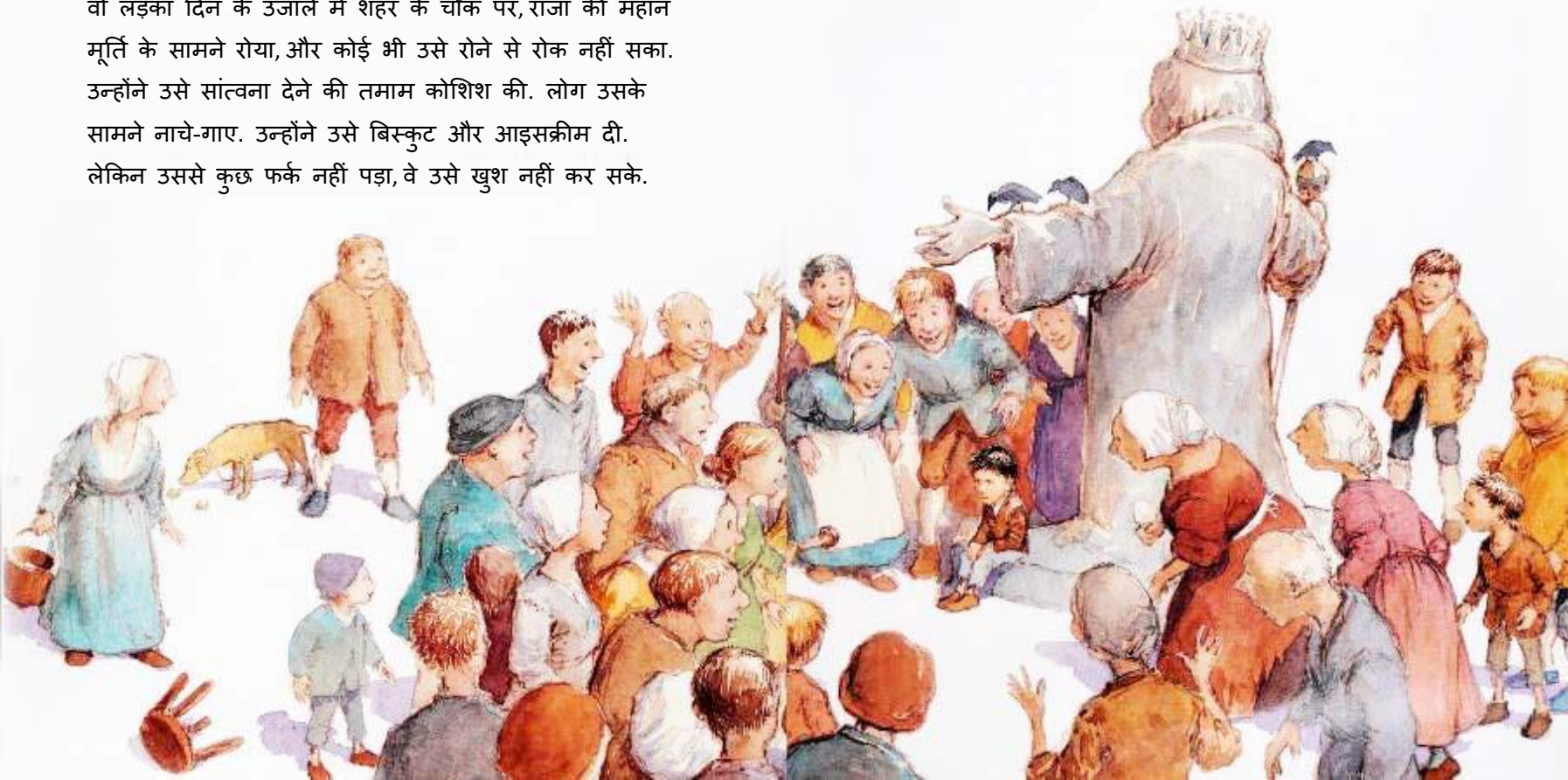

"यदि तुम जल्द ही नहीं हंसे तो राजा के पहरेदार तुम्हें आकर पकड़ लेंगे!" एक बूढ़ी औरत ने छोटे लड़के से कहा. "फिर वे तुम्हें महल में ले जाएंगे. वहां पर एक कालकोठरी है जहाँ वे लोगों को हँसाते हैं - वे लोगों को बाँधते हैं और उन्हें पंखों से गुदगुदाते हैं!"

और फिर जल्द ही राजा के पहरेदार आए और लड़के को पकड़कर महल में ले गए.

राजा देखने में बहुत उल्लेखनीय था. लड़के ने अभी तक किसी के चेहरे पर इतनी चौड़ी मुस्कान नहीं देखी थी.

"हो हो हो!" राजा मुस्कराया. "हमारे यहाँ यह क्या हुआ - एक दुखी बच्चा? असंभव! इस देश में हर कोई खुश है!"

"नहीं, लोग खुश नहीं हैं," लड़के ने कहा, "वे लोग सिर्फ दिखावा करते हैं. वे वास्तव में खुश नहीं हैं."

"देखो हमारे लोग खुश हैं!" राजा हंसा. "कोई भला क्यों दुखी होना चाहेगा?"

"लेकिन मैं दुखी होना चाहता हूँ," लड़के ने कहा.

"लेकिन.. लेकिन.. क्यों?" राजा ने पूछा.

"मेरे कुत्ते की वजह से," लड़के ने कहा.
"मेरे पास एक कुत्ता था और वह दुनिया
का सबसे अच्छा कुत्ता था.

"मैं अपने कुत्ते से बेहद प्यार करता
था और वह मुझसे प्यार करता था.
मेरा कुत्ता बहुत होशियार था.
वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त भी था.

"लेकिन एक दिन वो बीमार हो गया और फिर
वो मर गया. इसलिए मैं कभी-कभी दुखी होता
हूं. और मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि
आप मेरे साथ क्या सलूक करेंगे. मैं दुखी
रहूंगा, क्योंकि मैं दुखी होना चाहता हूं."

राजा ने कुछ भी नहीं किया. वो बस अपनी विशाल स्थिर मुस्कान के साथ लड़के को घूरता रहा. तभी राजा कुछ अजीब सी आवाज करने लगा. वो सिसकने और सुबकने लगा... जो बड़ा अजीब था, क्योंकि वो अभी भी एक कान से दूसरे कान तक मुस्कुरा रहा था.
लड़का काफी हैरान हुआ और फिर उसने राजा को करीबी से देखा. फिर लड़का चिल्लाया, "आपने वो मास्क (मुखौटा) क्यों पहना है!" और इससे पहले कि राजा हिल पाता, लड़के ने राजा के चेहरे का मास्क खींच लिया.

मास्क के पीछे उस लड़के ने अब तक का सबसे उदास चेहरा देखा.

महान राजा के गालों पर आँसू लुढ़क रहे थे.

"मैं एक खुश राजा नहीं हूँ," वो चिल्लाया.

"क्योंकि मेरे पास भी एक कुत्ता था, और वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त था. वह मेरा एकमात्र दोस्त था. हर कोई मुझे पसंद करने का दिखावा करता है, क्योंकि मैं राजा हूं, लेकिन केवल मेरा कुत्ता वास्तव में मुझसे प्यार करता था. वह मेरी चप्पल चबाकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता था, और मेरे सारे बिस्तर के कपड़े खींचता था और मेरी खाने की थाली से खाना भी चुराता था! केवल मेरा कुत्ता ही मेरा सच्चा दोस्त था.

"और फिर वो बूढ़ा होकर मर गया. उसके बाद मैं उदासी से भर गया. मेरी उपस्थिति में किसी ने हंसने या मुस्कुराने की भी हिम्मत नहीं की और महल एक दुखी स्थान बन गया. मैं चाहता था कि महल फिर से एक खुशहाल जगह बने, इसलिए मैंने एक कानून बना दिया और खुशी को अनिवार्य बना दिया. और जल्द ही मैं भी सब की तरह, खुश होने का नाटक करने लगा."

"दुखी होना ठीक है," लड़के ने कहा. "हर किसी को कभी-कभी दुखी होना चाहिए. जब मैं दुखी होता हूं, तो मैं अपने कुत्ते के बारे में सोचता हूं और तब मुझे उसकी वो सभी शरारतें याद आती हैं जो वो करता था."

इस पर राजा ने ऊपर देखा और कहा, "जब मैं फिडल बजाता था तो मेरा कुत्ता अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर नाचता था."

"बहुत खूब!" लड़के ने कहा. "यह तो बड़ी होशियारी की बात है! मेरा कुत्ता एक छल्ले में से गुज़रकर कलाबाज़ी लगा सकता था!"

"सच में?" राजा चिल्लाया. "मेरा कुत्ता बहुत शरारती था कि वो महल की रसोई से सॉसेज (मांस के टुकड़े) चुराता था."

"मेरा कुत्ता बहुत उधम मचाता था!" लड़के ने कहा. "उसने एक बार मेरी माँ की कपड़े सुखाने वाली डोरी से सारे धुले कपड़े खींच लिए और उन्हें कीचड़ में लपेट दिया."

"क्या बात है!" राजा हँसा और जल्द ही वे दोनों एक-साथ हँस रहे थे और अपने-अपने खुशी के क्षणों को याद कर रहे थे.

वे दोनों थोड़ा रोए भी.

"लोगों को वैसा ही करना चाहिए जैसा वे महसूस करते हैं." लड़के ने कहा.

"बेशक, मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ," राजा ने कहा. "मैंने बेवकूफी की!"

और उसी समय, राजा ने उस विशेष आदेश को फाड़ दिया, जिसने खुशी को अनिवार्य बनाया गया था. उस दिन से सभी को वैसा महसूस करने की छूट थी, जैसा वे चाहते थे.

क्या आप जानते हैं कि फिर क्या हुआ?

देश के सभी लोगों को रोना बहुत अच्छा लगा.

..क्योंकि बहुत सालों से उनमें से कोई नहीं रोया था!